पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/24-26 प्रकाशित 01.02.2025 इस अंक का मूल्य 2 रूपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दानदाताओं से अपील

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों में सहयोग करने हेतु **खाता संख्या 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया,** घन्टाघर, दिल्ली– 110007, **आई. एफ. एस. कोड** SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9810117464** पर एस.एम.एस कर दें या **9868051444** पर googlepay कर दें।

–अनिल आर्य

वर्ष-41 अंक-17 माघ-2081 दयानन्दाब्द 201 01 फरवरी से 15 फरवरी 2025 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशित: 01.02.2025, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य वेबीनार का समापन

विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति अपार आस्था –भुवनेश खोसला (प्रधान, अमेरिका आर्य समाज)

वेदों का ज्ञान विश्व को देना है –डॉ. अशोक कुमार चौहान (संस्थापक अध्यक्ष एमिटी शिक्षण संस्थान)

रविवार 26 जनवरी 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 47 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में त्रिदिवसीय आर्य वेबीनार का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि एमिटी शिक्षण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार चौहान ने कहा कि आज पूरा विश्व ज्ञान का प्यासा है उन्हें वेदों का ज्ञान आर्य समाज को देना है।उन्होंने कहा कि आर्य युवक परिषद् युवाओं को संस्कार देने का सराहनीय कार्य कर रही है।आज स्वामी दयानन्द जी के आदर्शो पर चलने की आवश्यकता है। आर्य समाज के व्यक्ति चरित्रवान होते हैं वह समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।यदि भारत को विश्व शक्ति बनाना है तो सभी को शिक्षित करने पर ध्यान देना होगा। समारोह अध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के प्रधान भुवनेश खोसला ने कहा कि आर्य समाज को विश्वपटल पर कार्य करने की आवश्यकता है।लोग जुड़ना व सच्चे धर्म को समझना चाहते हैं इस कार्य को आगे बढ़ाने की योजना बनाई जानी चाहिए।उन्होंने कहा कि विदेशों में भारतीय संस्कृति के प्रति अधिक आस्था है और भारतीय पर्व बड़े उत्साह से मनाए जाते हैं।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के यशस्वी राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन करते हुए कहा कि हम युवाओं के चरित्र निर्माण व सुसंस्कारित करने का कार्य तीव्र गति से बढ़ाएंगे। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेशवर जी ने राष्ट्र रक्षा यज्ञ से किया।युवकों द्वारा सौरभ गुप्ता के निर्देशन में व्यायाम प्रदर्शन के रोचक कार्यक्रम दिखाए गए। पिंकी आर्या, प्रवीण आर्य,जनक अरोड़ा,नरेश खन्ना आदि ने मधुर भजन सुनाए। वैदिक प्रवक्ता आनंद चौहान, अजय चौहान, डॉ. जयेन्द्र आचार्य, अतुल सहगल,आचार्य हरिओम शास्त्री, यशपाल यश जयपुर,सत्य भूषण आर्य (जिला व सत्र न्यायाधीश ओरंगाबाद) ,अजय सहगल (कमांडिंग ऑफिसर नार्थ कमान जम्मू कश्मीर लद्दाख), निश्चल याज्ञक यूएसए,अग्नि देव आर्य (बांग्लादेश), राजेन्द्र बेदी (अमेरिका),कमल मोगा (नैरोबी), विमल चड्ढ़ा (कैन्या), सुरेश शुक्ला (नार्वे),सुरेश पाण्डेय (स्वीडन),देवेन्द्र पाठक (तंजानिया), एस पी सिंह (बैंकॉक), आर्यवती बुलौकी (मॉरिशस) ,देव मित्र आर्य (दुबई), प्रेम हंस (ऑस्ट्रेलिया), डा. प्रमोद पाल आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। परिषद के राष्ट्रीय महासचिव महेन्द्र भाई व उपाध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।राष्ट्रीय मंत्री देवेन्द्र भगत ने कहा कि कृण्वंतोविश्वमार्यम के संदेश को सब तक पहुंचाते रहेंगे। प्रमुख रूप से आर्य नेता ओम सपरा, सुनील गुप्ता (पूर्व ला ऑफिसर तिहाड़ जेल), हरिओम शास्त्री, ईश् आर्य, कृष्ण कुमार यादव,अरुण आर्य ,धर्मपाल आर्य ,रामकुमार आर्य,दुर्गेश आर्य, आस्था आर्य उपस्थित थे।

सादर निमंत्रण सादर निमंत्रण सादर निमंत्रण

अमर शहीद भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में संगीत संध्या

"एक शाम शहीदों के नाम"

रविवार 23 मार्च 2025, शाम 4 बजे से रात्री 7.30 बजे तक

स्थानः आर्य समाज डी ब्लॉक, आनंद विहार, पूर्वी दिल्ली

ऋषि लंगर रात्री 7.30 बजे

आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

निवेदक

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	विनोद खुल्लर	दीपक वर्मा	दिनेश सेठ
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	प्रधान समाज	मन्त्री समाज	कोषाध्यक्ष समाज

महर्षि दयानन्द की प्रमुख देन चार वेद और उनके प्रचार का उपदेश

—मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

महर्षि दयानन्द ने वेद प्रचार का मार्ग क्यों चुना? इसका उत्तर है कि उनके समय में देश व संसार के लोग असत्य व अज्ञान के मार्ग पर चल रहे थे। उन्हें यथार्थ सत्य का ज्ञान नहीं था जिससे वह जीवन के सुखों सहित मोक्ष के सुख से भी सर्वथा अपरिचित व वंचित थे। महर्षि दयानन्द शारीरिक बल और पूर्ण विद्या से सम्पन्न पुरुष थे। उन्होंने देखा कि सभी मनुष्य अज्ञान के महारोग से ग्रस्त है। उनमें सत्य व असत्य जानने व समझने का योग्यता नहीं है। अतः अविद्या व अज्ञान का नाश करने के लिए उन्होंने असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वासों के खण्डन और सत्य, ज्ञान व सामाजिक उत्थान के कार्यों का मण्डन किया। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ उनकी इस प्रवृत्ति व स्वभाव की पुष्टि करता है। सत्यार्थप्रकाश के पहले 10 समुल्लास सत्य व ज्ञान का मण्डन करते हैं तथा शेष चार समुल्लास असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वासों का खण्डन करते हैं। महर्षि दयानन्द धर्मात्मा थे, दयालु थे, ईश्वर का यथार्थ ज्ञान रखने वाले ईश्वर भक्त थे तथा वह जीवात्मा का यथार्थ ज्ञान भी रखते थे। योग व ध्यान के द्वारा उन्होंने ईश्वर व जीवात्मा आदि का प्रत्यक्ष किया था। ऐसा विवकेशील धर्मात्मा सत्पुरुष किसी भी मनुष्य को दुःखी नहीं देख सकता। दुखियों को देख कर वह स्वयं दुखी होते थे। वह सबको अपने समान ईश्वर व आत्मा आदि का ज्ञान प्रदान कर सुखी व आनन्दित करना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने सत्य व यथार्थ ज्ञान का प्रचार करने के लिए ईश्वर से प्राप्त ज्ञान चार वेदों के प्रचार करने का निर्णय किया। यदि वह ऐसा न करते तो उनको चौन वा सुख—शान्ति न मिलती। यदि एक सच्चे डाक्टर के पास किसी रोगी को ले जाया जाये तो वह डाक्टर क्या करेगा? क्या उस रोगी को मरने के लिए छोड़ देगा व उसकी चिकित्सा कर उसे स्वस्थ करेगा? सभी जानते हैं कि सच्चा डाक्टर रोगी को स्वस्थ करने के उपाय करेगा। इसी प्रकार से एक अध्यापक जो ज्ञानी है, वह अपने व अपने लोगों का अज्ञान दूर करेगा। ज्ञानी होने का यही अर्थ होता है कि वह ज्ञान का प्रसार करे और अज्ञान को नष्ट करे। हम यह भी देखते हैं कि जब कोई अन्याय से पीड़ित होता है तो वह किसी शक्तिशाली मनुष्य की शरण में जाता है और उससे अपनी रक्षा की विनती करता है। धर्मात्मा व ज्ञानी शक्तिशाली मनुष्य अन्याय से पीड़ित व्यक्ति की रक्षा करना अपना धर्म वा कर्तव्य समझतें हैं। यह सब गुण महर्षि दयानन्द जी में थे अतः उन्होंने सभी असहाय व अज्ञान के रोग से पीड़ित लोगों को वेदों का ज्ञान देकर उन्हें ज्ञानी व शक्ति से सम्पन्न बनाया। हम व अन्य सहस्रों मनुष्य भी उनके ज्ञान से उनकी मृत्यु के 141 वर्षों बाद भी लाभान्वित हो रहे हैं। उनका यह कार्य ही उनको विश्व में आज भी जीवित व अमर रखे हुए है। यदि वह ऐसा न करते तो आज हम व अन्य करोड़ों लोग उनका नाम भी न जानते, उनके प्रति श्रद्धा व आदर रखने का तो तब प्रश्न ही नहीं था। इस स्थिति में हम वेद, ईश्वर, आत्मा व मोक्ष प्राप्ति आदि के उपायों को भी न जान पाते। अतः महर्षि दयानन्द ने अज्ञान रोग से पीड़ित अपने देशवासी बन्धुओं किंवा विश्वभर के सभी मनुष्यों के अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर करने के लिए वेद प्रचार का मार्ग चुना और उसे अपूर्व रीति से सम्पन्न किया।

यदि हम सूर्य पर दृष्टि डाले तो हम पाते हैं कि सूर्य में प्रकाश व दाहक शक्ति अर्थात् गर्मी व ऊर्जा है। सूर्य में आकर्षण शक्ति भी है। अपने इन गुणों का सूर्य अपने लिए प्रयोग नहीं करता अपितु वह इससे संसार व प्राणी मात्र को लाभान्वित करता है। यदि सूर्य न होता तो मनुष्य का सशरीर अस्तित्व भी न होता। इसी प्रकार से वायु पर विचार करने पर ज्ञात होता है कि वायु पदार्थों को जलाने में सहायक व समर्थ होने सहित वह मनुष्यों को प्राणों के द्वारा जीवित रखने में भी सहायक है। वायु का प्रयोजन अपने लिए कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार से जल, पृथिवी व समस्त प्राणी—जगत है जो स्वयं के लिए कुछ नहीं करते अपितु मनुष्यों व अन्यों के लिए ही अपने जीवन व अस्तित्व को समर्पित करते हैं। यदि सारा संसार व इसके सभी पदार्थ परोपकार कर रहे हैं तो क्या मनुष्य का यह कर्तव्य नहीं है कि उसमें ईश्वर ने जिन गुणों व शक्तियों को दिया है, उससे वह भी अन्य सभी मनुष्यों व प्राणियों का उपकार करें। यह अवश्य करणीय है और परोपकार करना ही मनुष्य का धर्म सिद्ध होता है।

मत व धर्म परस्पर सर्वथा भिन्न हैं। मत का कुछ भाग धर्म को एक अंग के रूप में अपने भीतर लिए हुए होता है लेकिन वेदमत जो कि ईश्वर प्रदत्त मत है, उसे छोड़ कर कोई भी मत सर्वांश में पूर्णतः धर्म नही होता। यदि मतों में से अविद्या व उनके सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों को हटा दिया जाये और उन्हें वेदानुकूल बनाया जाये, तब ही उन्हें धर्म के निकट लाया जा सकता है। महर्षि दयानन्द पौराणिक मत में जन्मे थे। शिवरात्रि की घटना से उन्हें लगा कि ईश्वर की पूजा की यह रीति उपासना की सही रीति नहीं है। अतः उन्होंने उसका त्याग कर दिया और सत्य की खोज की। सत्य की खोज करते हुए उन्हें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का सर्वोत्तम साधन योग प्राप्त हुआ। इसका अभ्यास कर उन्होंने ईश्वर का साक्षात्कार व उसका प्रत्यक्ष भी किया जिसे उनके जीवन व कार्यों से जाना जा सकता है। अपनी विद्या प्राप्ति की तीव्र इच्छा को पूरी करने के लिए वह योग्य गुरुओं की तलाश करते रहे जो उन्हें 35 वर्ष की अवस्था में मथुरा के गुरु विरजानन्द जी के रुप में प्राप्त हुई और उनके सान्निध्य में तीन वर्ष रहकर उन्होंने प्राचीन वैदिक संस्कृत भाषा के व्याकरण अष्टाध्यायी—महाभाष्य व निरुक्त पद्धति पर पूर्ण अधिकार प्राप्त किया। वैदिक साहित्य का कुछ अध्ययन वह पहले कर चुके थे और इस ज्ञानवृद्धि के प्रकाश में उन सभी ग्रन्थों के सत्यार्थ को जानकर वेदों के ज्ञान को भी उन्होंने प्राप्त किया। हमारे अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि महर्षि दयानन्द ने अध्यात्म के क्षेत्र में विद्या व योगाभ्यास से ईश्वरोपासना की शीर्ष स्थिति असम्प्रज्ञात समाधि को प्राप्त किया था। यह सब प्राप्त कर उनके जीवन का उद्देश्य व प्रयोजन पूरा हो गया था। अब अपने ज्ञान रूपी अक्षय धन को दान करने का अवसर था जिसे अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी वा ईश्वर की प्रेरणा से प्राप्त कर उन्होंने देश—देशान्तर में पूरी उदारता व निष्पक्ष भाव से वितरित वा प्रचारित किया। महर्षि दयानन्द जी ने जो ज्ञान प्राप्त किया था उसे हम ज्ञान की पराकाष्ठा की स्थिति समझते हैं। शास्त्रों में कहा गया है कि 'ज्ञान से बढ़कर पवित्र व मूल्यवान संसार में कुछ भी नहीं है।' ज्ञान का दान सब दानों में प्रमुख व महत्वपूर्ण है। जो कार्य ज्ञान से हो सकता है वह धन से कदापि नहीं हो सकता। धन से किसी को बुद्धिमान, बलवान, निरोग, वेदज्ञ, सत्पुरुष, धर्मात्मा नहीं बनाया जा सकता। इन व ऐसे सभी कार्यो के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। ज्ञान से ही अपनी आत्मा को जानने के साथ ईश्वर व संसार को भी जाना जा सकता है। ज्ञान से ही मनुष्य अभ्युदय व मोक्ष को प्राप्त होता है। ज्ञान मनुष्य की मृत्यु के बाद भी आत्मा के साथ जाता है जबकि सारे जीवन में अनेक कष्ट उठाकर कमाया गया धन यहीं छूट जाता है। धन मनुष्य में अहंकार व अनेक दोषों को उत्पन्न करता है। धन की तीन गति हैं। दान, भोग व नाश। धन को यदि सदाचारपूर्वक न कमाया जाये और दान न किया जाये तो वह इस जन्म व परजन्म में अवनति व दुःखों का कारण बनता है इस पर हमारे सभी ऋषि—मुनि व शास्त्र एक मत हैं। अतः जीवन की उन्नति के लिए परा व अपरा अर्थात् आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों प्रकार का ज्ञान मनुष्य को होना चाहिये। यही सन्देश वेद प्रचार के द्वारा महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में दिया था जो आज भी पूर्व की तरह सर्वाधिक महत्वपवूर्ण, उपयोगी एवं प्रासांगिक है।

हम वर्तमान समय में देश की जो उन्नति देख रहे हैं उसमें महर्षि दयानन्द का पुरुषार्थ सर्वाधिक महत्वूपर्ण प्रतीत होता है। उन्होंने संसार के लोगों को विस्मृत सत्य वेद ज्ञान से परिचित कराने के अतिरिक्त सभी अन्धविश्वासों, कुरीतियों जिनमें मूर्तिपूजा, फलित—ज्योतिष, मृतक श्राद्ध, मन्दिरों व नदियों रूपी तीर्थ स्थान, सामाजिक असमानता, अशिक्षा आदि का खण्डन किया और निराकार ईश्वर की योग व ध्यान विधि से उपासना, अन्धविश्वासों से सर्वथा दूर रहने, अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करने, नारी सम्मान, समानता, देशप्रेम, न्याय सहित सुपात्रों को ज्ञान व धन आदि के दान की प्रेरणा दी। उनका सन्देश है कि वेद ही सब सत्य विद्याओं, परा व अपरा, के ग्रन्थ हैं। इनका पढ़ना—पढ़ाना, सुनना—सुनाना व सर्वत्र प्रचार करना ही मनुष्य का परम धर्म है। जिन बातों से असमानता, पक्षपात, अन्याय, दूसरों का अपकार व हिंसा आदि हो, वह कभी भी किसी मनुष्य व समाज का धर्म नहीं हो सकतीं। ईश्वर की उपासना के लिए पवित्र जीवन व शुद्ध स्थान चाहिये। उपासना व ईश्वर के ध्यान के लिए बड़े—बड़े भवनों व मन्दिरों की आवश्यकता नहीं है। यदि महर्षि दयनन्द की इन शिक्षाओं को जीवन में स्थान दिया जाये तो इससे विश्व का कल्याण हो सकता है। उनकी बातों को न मानने के कारण ही आज विश्व में सर्वत्र अशान्ति व स्वार्थ से प्रेरित कार्य ही सर्वत्र होते दृष्टिगोचर हो रहे हैं जो वर्तमान व भविष्य में अनिष्ट का सूचक है। अतः अपने जीवन को शुभकर्मों से युक्त व श्रेष्ठ एवं आदर्श बनाने के लिए हमें महर्षि दयानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर वेदों के स्वाध्याय व वैदिक मान्यताओं के प्रचार का व्रत लेना चाहिये जिससे देश व संसार की उन्नति सहित मनुष्य का यह जन्म व परजन्म उन्नत होकर लक्ष्य प्राप्ति में सफल हो।

—196 चुक्खूवाला—2, देहरादून—248001, फोनः09412985121

आर्य समाज रोहिणी का उत्सव सम्पन्न

रविवार 12 जनवरी 2025, वैदिक सत्संग मंडल सेक्टर 15 रोहिणी का उत्सव सम्पन्न हुआ। चित्र में आचार्य हरिओम शास्त्री को सम्मानित करते अनिल आर्य, स्वामी अखिलानंद जी गुरुकुल पु ठ, हापुड़, प्रदीप गुप्ता एडवोकेट, वी पी शास्त्री, कवि प्रशांत आदि।

त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य वेबिनार का भव्य शुभारंभ

नारी राष्ट्र की उन्नति का आधार है –आर्यवती बुलाकी माँरीशस
महर्षि दयानन्द ने महिलाओं को अधिकार दिये –विमलेश बंसल

शुक्रवार 24 जनवरी 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 47वें वार्षिकोत्सव पर राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य के सानिध्य में त्रिदिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य महा वेबिनार का आयोजन किया गया ।करोना काल से 690 वाँ वेबिनार था। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेशवर (हरिद्वार) ने यज्ञ से किया उन्होंने कहा कि वैदिक संस्कृति पुरातन व सर्वश्रेष्ठ है। द्वितीय सत्र में 'अंतरराष्ट्रीय आर्य महिला सम्मेलन' का आयोजन किया गया 1मुख्य वक्ता आचार्य विमलेश बंसल ने नारी सशक्तिकरण पर जोर देते हुए सभी को स्वामी दयानंद जी के पदचिन्हों पर चलने के लिए प्रेरित किया तथा नारियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी ।उन्होंने कहा कि आर्य समाज ने बाल विवाह, सती प्रथा जैसी कुरीतियों को बंद किया और विधवाओं को पुनर्विवाह के अधिकार दिऐ। मुख्य अतिथि मॉरीशस से वैदिक विदुषी आर्य वती बुलौकी ने बताया की नारियों के अंदर प्रबल शक्ति है उन शक्तियों का प्रयोग कर नारी अपने परिवार,अपने राष्ट्र,अपने धर्म के प्रति आगे बढ़कर कार्य करने को प्रोत्साहित होती है ।उन्होंने स्वामी दयानंद जी का भी धन्यवाद करते हुए उन्हें नमन किया ।उन्होंने अपने विचारों में सब को बताया कि नारी नर हृदय की आशा है,नारी को कंधे से कंधा मिलाकर चलना है तभी राष्ट्र की उन्नति हो सकती है इसलिए नारी तू आत्मनिरीक्षण कर और सबको आर्य बना। प्रो.करुणा चांदना ने बताया कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जहां पर नर और नारी सभी को समान रूप से सम्मान प्राप्त होता है। नारी शक्ति की देवी है,नारी तू आगे बढ़ ।उन्होंने आगे कहा कि यदि नारी स्वस्थ है तो पूरा परिवार स्वस्थ और निरोगी रह सकता है ।बिमला आहूजा ने अपने सुंदर विचारों द्वारा स्वामी जी का धन्यवाद किया और नारियों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आर्य नेत्री रजनी गर्ग ने स्वामी दयानंद जी की विचारधारा को वेदों के चार स्तंभ के आधार पर रखते हुए बताया कि समानता, वसुदेव कुटुंबकम, किसी भी कार्य का प्रमाण रूप और धर्म के वास्तविक स्वरूप इन विचारों को अपनाएं। उन्होंने बताया कि धर्म के लक्षणों को जीवन में उतार कर हमें आगे बढ़ना होगा ।नारी को अपने बच्चों को गर्भ से ही अच्छे संस्कार देना प्रारंभ कर देना चाहिए। कार्यक्रम संचालक श्रुति सेतिया ने नारियों को आगे बढ़ने की दिशा में प्रेरणा देते हुए अपने सुंदर विचार रखें तथा एक प्रेरणादाई कविता भी सुनाई। इस अवसर पर सुनीता बुग्गा,चन्द्र कांता आर्य, द्रौपदी तनेजा, कृष्णा मुखी ने भी अपने विचार रखे। गायिका पिंकी आर्य,कृष्णा गाँधी, रचना वर्मा वर्मा,जनक अरोड़ा, प्रतिभा कटारिया, रचना वर्मा, सुनीता बुग्गा ने मधुर भजनों के द्वारा सभी का मन मोह लिया। श्रुति सेतिया ने नारियों को आगे बढ़ने और समाज को जागृत रहने की दिशा में अपने विचार रखें ।कुसुम भण्डारी द्वारा शांति पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न कराया गया ।केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार का दुसरा दिन

हिन्दी पूरे भारत को एक सूत्र में पिरो सकती है –आर्य रवि देव गुप्ता
आर्य समाज को विश्व पटल पर कार्य योजना देनी होगी –विमल चड्ढा नेरोबी
सनातनी बनना चाहते हैं तो वेद से जुड़ना होगा –विष्णु मित्र वेदार्थी
नई पीढ़ी को संस्कारवान बनाने का अभियान चलाएगें–राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य

शनिवार, 25 जनवरी 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 47वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में 'त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महावेबिनार' के दूसरे दिन का आयोजन जूम पर ऑनलाइन किया गया। वैदिक विद्वान आचार्य अखिलेश्वर जी (हरिद्वार) ने राष्ट्र रक्षा यज्ञ से शुभारंभ किया, उन्होंने राष्ट्र रक्षा के सुरक्षा मन्त्रों से आहुतियां डलवाई ।उनके साथ 101 परिवारों ने अपने अपने घर पर एक साथ यज्ञ किया। राष्ट्र रक्षा सम्मेलन में मुख्य वक्ता रवि देव गुप्ता ने कहा हमें अपने राष्ट्र को पुष्ठ करने के लिए संकल्प करना है और वह यह है कि हिन्दी भाषा का सम्मान करें। हिंदी पूरे भारत को एक सूत्र में पिरो सकती है। इसके अतिरिक्त उन्होंने पंच महायज्ञों पर भी विस्तृत चर्चा की। प्रवासी सम्मलेन की अध्यक्षता करते हुए विमल चड्ढा (नेरोबी) ने कहा कि हमारे पास उच्च मूल्य,ज्ञान का भंडार है लेकिन हमें प्रस्तुत करना नहीं आया हमें विश्व पटल पर अपनी कार्य योजना देनी होगी भारतीय संस्कृति के गुण लाभ समझाने होंगे तभी विश्व का आर्य करण करने में सक्षम हो सकेंगे। थाईलैंड से एस पी सिंह ने कहा कि आज आर्य समाज को विश्व की क्या समस्याएं है? ये जानने व उसका हल प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। यूएसए से राजेंद्र बेदी ने कहा कि स्वामी दयानंद के मार्ग पर चलकर हम अपने आप को गौरवान्वित महसूस करते हैं। मुख्य वक्ता आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने प्रवासी सम्मलेन में सनातन कि विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि प्रवासी एकता के सूत्र से जुड़ना चाहते हैं तो उन्हें वेद ज्ञान से जुड़ना होगा ।वेद सदा से हैं ।हमें सनातन को समझना होगा ।जो सदा से है,सदा रहेगा और नया प्रतीत होता है,वह सनातन है ।इसलिए सनातन से जुड़ो ।वेद ज्ञान का आदि मूल परमेश्वर है ।वेद रूपी ख़ज़ाने से जुड़ो,स्वाध्याय कर ज्ञान वृद्धि करो। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने कहा कि वर्तमान परिवेश में समाज के ज्वलंत मुद्दों का हल कर के आर्य समाज विश्व मे नेतृत्व प्रदान कर सकता है ।साथ ही नई पीढ़ी को सुसंस्कारित करने को एक लक्ष्य बना कर चलना होगा। योगी प्रवीण आर्य ने कहा कि यज्ञ,योग व ध्यान को जीवन का अंग बनायें, जिससे हमारी आधारशिला मजबूत होगी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के महामंत्री महेंद्र भाई,प्रेम हंस (ऑस्ट्रेलिया), देवेन्द्र पाठक (तंजानिया), देवेन्द्र भगत, सुरेश आर्य, श्रीकृष्ण दहिया,दुर्गेश आर्य,द्रोपदी तनेजा,प्रतिभा कटारिया ने भी मार्गदर्शन दिया। गायिका पिंकी आर्या,प्रवीण आर्य, संतोष श्रीधर,कुसुम भंडारी,सुदेश आर्या,ऋचा गुप्ता,जनक अरोड़ा एवं सरला बजाज आदि ने अपने गीतों से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

आर्य समाज अशोक विहार व केशव पुरम का उत्सव सम्पन्न

रविवार 19 जनवरी 2025, आर्य समाज अशोक विहार फेज 1,दिल्ली में बच्चों की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य, राकेश मेहता ,विनय आर्य, सत्यपाल गांधी, स्वामी जयंत जी कन्व आश्रम कोटद्वार उपस्थित थे। प्रेम सचदेवा व जीवन लाल आर्य ने संचालन किया। द्वितीय चित्र में रविवार 12 जनवरी 2025, वैदिक सत्संग श्रीमती किरण सेठी के सानिध्य में केशव पुरम पार्क में सम्पन्न हुआ। आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री ब्रह्मा के रूप में सम्मिलित हुए। परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य का स्वागत करते अनिल सेठी, धर्मदेव खुराना, महेश आर्य आदि।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् द्वारा कोरोना काल से 698वां वेबिनार सम्पन्न

गणतंत्र दिवस पर अन्तर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन सम्पन्न

कविता अभिव्यक्ति का माध्यम है –प्रो. नरेन्द्र आहूजा विवेक

शनिवार, 25 जनवरी 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के 47 वें वार्षिकोत्सव व गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में अन्तर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य की अध्यक्षता में किया गया।जिसका यू–ट्यूब व जूम प्लेटफार्म पर लाइव प्रसारण किया गया। हरियाणा राज्य औषधि पूर्व नियन्त्रक और केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के प्रान्तीय प्रभारी नरेन्द्र आहूजा विवेक ने 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर कवि सम्मलेन का कुशल संचालन करते हुए कहा की वेद आदि कवि की कविता है जो मनुष्य मात्र के लिए संविधान है, मानव के लिए कल्याणी वाणी है।कविता अभिव्यक्ति का माध्यम है। दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रोफेसर अंजू अग्रवाल इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित रही।कविवर सत्य प्रकाश भारद्वाज फरीदाबाद द्वारा ओ३म् की ध्वनि करके कवि सम्मेलन का शुभारंभ किया गया।उन्होंने अपनी कविता पुकार सुनी क्या कभी मात की?,क्या कभी व्यथा पर ध्यान दिया?, चाहा जो मात्र भूमि ने,क्या तुमने प्रदान किया? । हमसे ना तू खाने की, ना पीने की बात कर, मर्दों की तरह जीवन जीने की बात कर। वीरों के मस्तक पर चढ़कर मिट्टी फिर मुस्कुराती है कविता के माध्यम से संस्कारो का महत्व बतलाया।उन्होंने कहा कि कष्ट मिलने के बाद भी हमें हार नहीं माननी चाहिए और दूसरो के दुःख दूर कर स्वयं खुश होना चाहिए। कवि धर्मेश द्वारा अमर शहीदों को शत शत नमन करते हुए अपनी कविता दुखी बहुत है गद्दारों से आज यह भारत माता। कवि सुरेश पाण्डेय (स्वीडन) ने अपनी रचना जुड़ जाता हूं किस–किस से मैं, नहीं पता यह अब तक मुझको, सुनाकर मन मोह लिया। कवि वीरेंद्र आहूजा ने अपनी रचना बुलबुलो अगर तुम्हारा चमन लुट गया, चह चहाने बताओ कहां जाओगे? सुनाकर भावविभोर कर दिया। प्रोफेसर अंजू अग्रवाल ने अपनी रचना यह गणतंत्र अधूरा है पूरा हमें बनाना है, सुनाकर आज के हालात पर विशेष चर्चा की। कवि सुधीर बंसल फरीदाबाद ने अपनी रचना ढूंढते रह जाओगे, लुगाइयों का घाघरा, खिचड़ी का बाजरा। मुंबई से काव्यित्री ऋचा ने अपनी रचना में कहा जो अपनी रक्षा आप करें,उसके संग विधाता है, यह कंकड़ पत्थर रेत नहीं, यह तो भारत माता है, सुनाकर देशप्रेम कि भावना को जागृत कर दिया। काव्यित्री प्रतिभा कटारिया ने गणतंत्र का सार बताते हुए कहा कि हमारा गणतंत्र हमारे देश की पहचान, जुड़ा है उससे देश का स्वाभिमान। नार्वे से सुरेश चंद्र शुक्ल ने 26 जनवरी को संविधान लागू हुआ यह बताया और अपनी रचना प्रभु संविधान दिया है तो लोकतंत्र बहाल कीजिए, सुनाई। काव्यित्री अलका गुप्ता (मेरठ) ने उठो देश के सपूतों मां भारती पुकारती। बिंदु मदान ने जहां डाल–डाल पर सोने की चिड़िया करती हैं बसेरा। इसके अतिरिक्त नैरोबी से कमलेश मोगा, पिंकी आर्या आदि ने कविताएं सुनाई समर्पण ही समर्पण है इस दुनिया में बेटियों के लिए पंक्तियों के साथ ही विभिन्न मुक्तकों द्वारा सभी श्रोताओं में जोश भर दिया। योगी प्रवीण आर्य ने स्वामी दयानंद सरस्वती की शिक्षा पर कविता प्रस्तुत की।अध्यक्षता करते हुए ओम सपरा ने नये आंग्ल वर्ष पर नये दोस्त बनाने का सुझाव देती हुई कविता सुनाई। हरियाणा प्रदेश के परिषद् अध्यक्ष स्वतंत्र कुकरेजा ने भी इस अवसर पर अपनी पंक्तियों का गायन किया जिसकी सभी ने सराहना की। राष्ट्रीय अध्यक्ष अनिल आर्य ने सभी से देश की एकता अखंडता को सुरक्षित रखने का आह्वान किया। महामंत्री महेंद्र भाई ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

'शीत ऋतु है घृतसमाना' विषय पर गोष्ठी सम्पन्न

घी और तिल का सेवन वरदान है –आचार्य हरिओम शास्त्री

सोमवार 20 जनवरी 2025, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में 'शरद ऋतु है अमृत समाना' विषय पर ऑनलाइन गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह कोरोना काल से 689 वाँ वेबिनार था। मुख्य वक्ता आचार्य हरि ओ३म् शास्त्री ने कहा कि शीत ऋतु है घृतदुग्ध समाना। तिलान्नप्राश कर स्वस्थ सुजाना।आयुर्वेद शास्त्र और भारतीय कहावतों के अनुसार शीत ऋतु और वसन्त ऋतु घृत के समान हैं क्योंकि इन दोनों ऋतुओं में जो भी खाया जाता है वह घी की तरह ही स्वास्थ्यवर्धक होता है। यही कारण है कि जहां पर शीतलता अधिक होती है वहां के लोग गोरे और सुंदर होते हैं तथा जहां पर अधिक ग्रीष्म होती है वहां के लोग कृष्णवर्ण के होते हैं। साथ ही जहां समशीतोष्ण ऋतुएं होती हैं वहां के लोग ताम्रवर्णी होते हैं। इस शीत ऋतु में पापनाशक और कष्टनाशक कार्य के रूप में तिलों के छः प्रकार बताए गए हैं– तिलस्नायी तिलोद्वर्ती तिलहोमी तिलोदकी। तिलभुक् तिलदाता च षट्तिलारू पापनाशनारू अर्थात् –तिल के जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल से हवन, तिल का जलपान, तिल का भोजन, तिल का दान ये छः कार्य पापनाशक होते हैं। यजुर्वेद के पुरुषसूक्त में कहा गया है – ओ३म् यत् पुरुषेण देवारूयज्ञमतन्वत। बसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मरू शरद्हविरू।। यजु.३१/१४ अर्थात् ईश्वर ने बसंत और शिशिर ऋतुओं को आज्य (घी), ग्रीष्म और वर्षा ऋतुओं को इध्म (समिधा) तथा शरद् और हेमंत ऋतुओं को हवि (सामग्री व अन्न) के रूप में संसार को दिया है। हम भारतीय कितने भाग्यशाली हैं कि हमारे जिम्मे सारी ऋतुएं आती हैं।हम किसी भी ऋतु हेतु तरसते नहीं हैं।इसीलिए तो हम सांवले अर्थात् ताम्रवर्णी होते हैं।हमें इस शीत ऋतु में खूब अधिक तैलीय और पौष्टिक भोजन करना चाहिए जिससे शरीर स्वस्थ और वर्ण भी सौंदर्य युक्त हो। घृत, दुग्ध व अन्य पौष्टिकता युक्त पदार्थ सेवन करके स्वास्थ्य को पुष्ट करना चाहिए। मुख्य अतिथि आर्य नेत्री विमला आहूजा व अध्यक्ष चन्द्र कांता गेरा ने शीत ऋतु को अत्यंत उपयोगी बताया।परिषद अध्यक्ष अनिल आर्य ने कुशल संचालन किया व प्रदेश अध्यक्ष प्रवीण आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गायिका प्रवीना ठक्कर, कौशल्या अरोड़ा, जनक अरोड़ा ,कमला हंस ,सुमित्रा गुप्ता, रविन्द्र गुप्ता, कुसुम भंडारी,सुधीर बंसल।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिंटर्स**, 2199/63,नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 **मो.**: 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970